वर्ष – 3
अंक–11

धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना

वत्थु सहावो धम्मो

प्रकाशक – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) म.प्र.
संपादक – विराग शास्त्री, जबलपुर

हमारे तीर्थ क्षेत्र

सिद्धक्षेत्र राजगृही

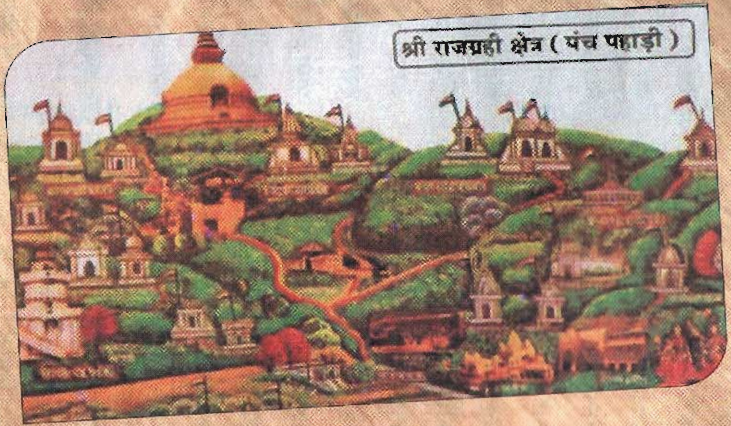

सिद्धक्षेत्र राजगृही बिहार प्रान्त के नालन्दा जिले में स्थित है। यहाँ पर भगवान मुनिसुव्रतजी के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुये हैं। यहाँ के विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर स्वामी का समवशरण में पहली बार उपदेश हुआ था। यहाँ भगवान महावीर ने 12 चातुर्मास किये थे। यहाँ की विपुलाचल, रत्नगिरि, उदयगिरि, अरुणगिरि व वैभवगिरि आदि पहाड़ियों से अनेक मुनियों ने निर्वाण की प्राप्ति की, इसलिये इसे निर्वाण क्षेत्र कहा जाता है। यहाँ पर गर्म पानी का झरना है जिसमें हमेशा प्राकृतिक रूप से पानी हमेशा गर्म ही रहता है।

यहाँ पर पहाड़ पर 10 और नीचे 2 मंदिर हैं। यहाँ से कुण्डलपुर 15 किमी, पावापुरी 35 किमी, गुणावा 40 किमी, पटना 100 किमी की दरी पर हैं।

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

1. **बाहुबली को तीर्थंकर क्यों नहीं कहते हैं?**

उत्तर– भरत क्षेत्र में पांच कल्याणक के धारी एवं तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म के उदय वाले जीव ही तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर का समवशरण होता है। बाहुबली भगवान तो थे परन्तु तीर्थंकर प्रकृति का उदय न होने से वे तीर्थंकर नहीं कहलाते।

2. **सच्चा शिष्य कौन है?**

उत्तर – जो अपने गुरु की आज्ञा अनुसरण करता है।

3. **चैत्र वैशाख आदि नाम किस आधार पर रखे गये हैं?**

उत्तर – नक्षत्रों के आधार के ये नाम रखे गये हैं। आकाश में नक्षत्र सदा से हैं।

4. **दीक्षा लेने के बाद क्षुल्लक, ऐलक के नाम क्यों बदल दिये जाते हैं?**

उत्तर – जब वे संसारिक रूप त्यागकर वीतरागी रूप हो गये हैं, तब गृहस्थी का नाम रह जाने से पुराने सम्बन्धों की याद आने संभावना रहती है। जब अपने समस्त सम्बन्धियों से सम्बन्ध टूट गया तो पुराना नाम नहीं रखना।

5. **टी.वी. पर जो रामायण, गणेश, विष्णु आदि के सीरियल दिखाये जा रहे हैं क्या वे घटनायें सच हैं?**

उत्तर – गणेश, विष्णु आदि की कथाओं का जिनवाणी में कहीं कथन नहीं है। रामायण आदि की घटनायें कुछ-कुछ मिलती हैं। इस प्रश्न के सही उत्तर के लिये आपको जैन पुराण पढ़ना चाहिये। आपकी शंका का उत्तर स्वयं ही मिल जायेगा।

6. **सूर्योदय से पूर्व जिनेन्द्र भगवान का प्रक्षाल – पूजन कर सकते हैं?**

उत्तर– सूर्योदय पूर्व प्रक्षाल – पूजन करना पाप बंध का कारण है। सूर्योदय पूर्व तो रात्रि होती है जब रात्रि भोजन करने का निषेध है तो जिनेन्द्र भगवान का पूजन-प्रक्षाल नहीं कर सकते।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

हमारे मुनिराज

दिगम्बर परम्परा में आचार्य समन्तभद्र का प्रमुख स्थान है।

आचार्य समन्तभद्र दक्षिण भारत के उरगपुर त्रिचनापल्ली के राजा कीलिक वर्मन के छोटे पुत्र थे। आपका जन्म लगभग 1800 वर्ष पूर्व हुआ था। आपके बचपन का नाम शान्ति वर्मन था।

धर्म, न्याय, व्याकरण, साहित्य, आयुर्वेद, आदि विद्याओं में कुशल होने साथ और बोलने में बहुत कुशल थे।

आचार्य समन्तभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र, आप्त मीमांसा, युक्तानुशासन, स्तुति विद्या, रत्नकरण्डश्रावकाचार आदि ग्रंथों की रचना की है।

आचार्य समन्तभद्र चारण ऋद्धि (आकाश में चलना) प्राप्त थी और ये भविष्य के तीर्थंकर होंगे।

समन्तभद्र मुनिराज को मुनि अवस्था में भस्मक व्याधि हो गई थी, जिसके कारण उन्हें बहुत भूख लगती थी। उन्होंने अपने गुरु से समाधिमरण की आज्ञा मांगी परन्तु गुरु को मालूम था कि मुनि समन्तभद्र आने वाले समय में जिनधर्म की प्रभावना करेंगे इसलिये उन्होंने मुनि पद छोड़ने की आज्ञा दी और रोग ठीक होने पर पुनः दीक्षा लेने का आदेश दिया। समन्तभद्र ने मुनि पद छोड़ दिया और अपनी भूख मिटाने के लिये समन्तभद्र ने वाराणसी के राजा शिवकोटि के शिव मंदिर में पुजारी का पद ले लिया। शिव के भक्त शिव को चढ़ाने के लिये जो सामग्री लाते थे वह सब सामग्री समन्तभद्र खा जाते थे। एक दिन वे सामग्री खाते हुये पकड़े गये तब राजा ने समन्तभद्र को शिव पिण्ड को नमस्कार करने की आज्ञा दी। समन्तभद्र बोले– मैं मात्र वीतरागी जिनेन्द्र को नमस्कार करता हूँ और उन्होंने वहीं पर स्वयंभू स्तोत्र की रचना करना प्रारंभ कर दी जिसके प्रभाव से शिव पिण्डी में से भगवान चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा प्रगट हुई। इससे प्रभावित होकर राजा समन्तभद्र को अपना गुरु स्वीकार किया। बाद में रोग ठीक होने पर समन्तभद्र ने पुनः मुनि दीक्षा ली और आचार्य समन्तभद्र से शिवकोटि राजा ने मुनि पद की दीक्षा ली। बाद में आचार्य समन्तभद्र ने जैन धर्म का बहुत प्रचार किया।

ज्ञान पहेली

- मानव, सिद्ध, तोता।
  सुखी इनमें कौन होता?

- पेड़, मुनि, किसान, बंदर।
  कौन रहे आतम के अन्दर ॥

- आत्मज्ञानी और डॉक्टर, धनवान।
  सच्चे सुख का कौन निधान।

- कला, जिनवाणी, गणित, विज्ञान।
  हितकारी है किसका ज्ञान ॥

इन पहेलियों के उत्तर इसी अंक में हैं।

पिछले अंक में प्रकाशित पहेलियों के उत्तर

1.मुनिराज 2. मुनि आदिनाथ 3. चिंता 4. जिनवाणी उपदेश 5. घंटा

कविता

रोज सबेरे उठकर बच्चो! सभी बड़ों को करो प्रणाम।
वो देंगे आशीष तुम्हें जब, बन जायेंगे सारे काम॥
होता वही सफल जीवन में, जो आगे बढ़ता जाता ।
बाधाओं से लड़कर वह ही, अपनी मंजिल पाता॥
चलते रहो सदैव जगत में, क्या थकना क्या सुस्ताना।
हार मानकर बैठा जो भी, उसे पड़ा है पछताना॥

पाऊच का पानी

गर्मी के मौसम में प्यास के कारण बार-बार पानी पीने की इच्छा होती है। घर में शुद्ध छना पानी पीने को मिल जाता है। लेकिन बाहर निकलते ही पानी की समस्या होने लगती है और बच्चे से लेकर बड़े तक बिसलरी की बोतल या पानी पाऊच से अपनी प्यास बुझाते हैं। क्या आप जानते हैं कि बिसलरी का पानी पीने योग्य है या नहीं। जिनधर्म के अनुसार कोई भी पानी तीन दिन के बाद पीने योग्य नहीं होता। चाहे उसे उबालकर रखा जाये या बाद में फिर से उबाला जाये वह अनछना और अशुद्ध ही है। बिसलरी का पानी महीने पहले ही बोतलों में बंद कर दिया जाता है और पानी पाऊच तो और भी अधिक खतरनाक हैं। तीन दिन के बाद पाऊच के पानी में पॉलीथिन के केमिकल्स घुलने लगते हैं, जो लोगों को पानी के साथ बीमारियाँ भी दे देती हैं। डाक्टरों ने पॉलीथिन में कोई भी खाने की वस्तु को शुद्ध नहीं बताया है। दुकानों में धूप और गंदगी के कारण यह पानी और भी अशुद्ध हो जाता है। सरकारी नियमों के अनुसार प्रत्येक पानी कंपनी को आई एस आई मार्क ब्यूरो ऑफ इण्डिया स्टेण्डर्ड से लाइसेंस लेना पड़ता है। लाइसेंस के पहले उस कंपनी के पानी और पैंकिंग की गुणवत्ता की जांच होती है जिसके आधार पर उन्हें लाइसेंस प्रदान किया जाता है। इस लाइसेंस को समय-समय पर नवीनीकरण होना आवश्यक है। प्रत्येक पाऊच पर निर्माण की तिथि, बैच नम्बर, एक्सपायरी तिथि प्रकाशित करना आवश्यक है। नियम पालन न करने पर अथवा पानी में खराबी पाये जाने पर 6 माह की जेल अथवा 10 हजार जुर्माने की सजा है। परन्तु भ्रष्ट अधिकारियों के कारण न तो नियमों का पालन हो पाता है और न ही गलत काम करने वालों को सजा हो पाती है।

किसी पानी पाऊच की फैक्टरी में स्वयं की पानी टेस्टिंग लैब और लेब में केमिस्ट और एक माइक्रोबायोलिस्ट होना चाहिये, परन्तु भारत की गलियों में चलने वाली फैक्टरियों में इसकी कोई व्यवस्था नहीं होती। कई बार तो फिल्टर मशीन से उत्पादन कम होता है और गर्मी अधिक होने पर खपत ज्यादा। तो ये फैक्टरी वाले साधारण पानी को ही पाऊच में पैक कर देते हैं।

तो बालको! अब तो आप समझ ही गये होंगे कि बिसलरी या पाऊच का पानी कितना खतरनाक है। तो आप जब भी घर से बाहर निकलें तो अपना वाटर बैग साथ में अवश्य रखें और ये संभव न हो तो अपना पानी छानने का कपड़ा अवश्य साथ में रखें और पानी को छानकर पियें तो पाप से भी बचोगे और बीमारियों से भी।

जैन श्रमण (मुनि) संस्कृति से प्रभावित दो विदेशी संत

संत डायोजिनीज

सुकरात के समय में होने वाले डायोजिनीज बहुत बड़े विद्वान थे। उनको भोग सामग्री की बहुत उपेक्षा थी। वे अत्यंत साधारण जीवन पसंद करते थे और शुद्ध और सादा भोजन करते थे। वे लकड़े के पाइप में नग्न पड़े हुये मस्त रहते थे। उन्हें किसी की कोई चिन्ता नहीं थी। एक बार उनके गुणगान सुनकर सम्राट सिकन्दर उनके दर्शन के लिये आये। सिकन्दर ने पूछा कि हे महात्मा मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? मुझे अपनी सेवा करने का अवसर प्रदान करें। डायोजिनीज ने अत्यंत सहज भाव से कहा कि मैं बस यही चाहता हूँ कि तुम मेरे सामने से हट जाओ क्योंकि मुझे धूप नहीं आ रही है। इस मस्त स्वभाव के कारण लोग इन्हें कहा(Cynic) कहते थे।

पाइथागोरस

ईसा मसीह से 600 वर्ष पूर्व इटली में पाइथागोरस नाम के महात्मा हुये हैं। कहते हैं कि उन्हें पूर्व जन्मों का ज्ञान था। वे कई बार अपने पूर्व जन्मों की चर्चा करते थे। वे पशु-पक्षियों की भाषा समझते थे। उनके कई शिष्य थे। उन्होंने अपने शिष्यों को शराब, मांस का सेवन मना कर दिया था। वे अपने शिष्यों को अधिक से अधिक मौन रहने के लिये कहते थे। वे और उनके शिष्य गुफाओं में कई महीनों तक मौन धारणकर बैठते थे। कहते हैं उन्हें इसकी प्रेरणा जैन मुनियों से प्राप्त हुई थी। कुछ विद्वानों का मानना है कि पाइथागोरस और उनके अनेक शिष्यों ने गुफा के अन्दर बैठे-बैठे समाधिमरणपूर्वक अपने प्राणों का त्याग किया था।

– सन्मति संदेश के साभार

कर्म

बच्चो! आप पिछले अंक में आठ कर्मों से चार घातिया कर्मों के बारे में पढ़ चुके हैं। इस अंक में पढ़िये शेष चार अघातिया कर्मों के बारे में -

5. वेदनीय कर्म - जिस कर्म के उदय में हमें बाह्य सामग्री आदि मिलती है उसे वेदनीय कर्म कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। जिस कर्म के उदय में हमें अपनी इच्छा के अनुसार अनुकूल सामग्री मिले उस कर्म को साता वेदनीय कर्म कहते हैं जैसे हमें गर्मी लग रही है और पंखे की हवा चाहिये और हमें मिल जाये और जिस कर्म के उदय में हमें अपनी इच्छा के विपरीत प्रतिकूल सामग्री मिले - जैसे हमें अच्छी वस्तु चाहिये और खराब वस्तु प्राप्त हो । उसे असाता वेदनीय कर्म कहते हैं।

किसी जीव को रुलाने, मारने, सताने, निन्दा आदि कार्य करने से असाता वेदनीय कर्म का बंध होता है और सभी प्राणियों के प्रति वात्सल्य, देव पूजा, दान, गुणीजनों की प्रशंसा के भाव से साता वेदनीय कर्म का बंध होता है।

6. आयु कर्म - जिस कर्म के उदय में जीव जितने समय तक मनुष्य, नारकी, देव, तिर्यन्च शरीर में रहता है उसे आयु कर्म कहते हैं। जैसे - किसी व्यक्ति की आयु 70 वर्ष की थी, किसी गाय की आयु 20 वर्ष की है तो इसमें आयु कर्म का उदय निमित्त होता है।

मंद परिणामों से देव, कम पाप और परिग्रह से मनुष्य, छल-कपट परिणामों से तिर्यन्च और अधिक हिंसा और अधिक परिग्रह के भाव से नरक आयु का बंध होता है।

7. नाम कर्म - जिस कर्म के उदय में शरीर की रचना होता है, उसे नाम कर्म कहते हैं। मोटा-पतला, गोरा-काला, लम्बा-ठिगना शरीर मिलना, अच्छी-बुरी वाणी मिलना आदि नाम कर्म का कार्य है।

मन-वचन-काय की सरलता से शुभ नाम कर्म और मन- वचन - काय की कुटिलता से अशुभ नाम कर्म का बंध होता है।

8. गोत्र कर्म - जिस कर्म के उदय में जीव उच्च गोत्र या नीच गोत्र में जन्म लेता है, उसे गोत्र कर्म कहते हैं।

दूसरों की निन्दा और अपनी प्रशंसा करने से, घमंड करने से नीच गोत्र का बंध होता है और अपने दोषों को स्वीकार करने से, विनम्रता से उच्च गोत्र का बंध होता है।

पास किसने किया ?

– मम्मी मम्मी ! मैं पास हो गया।

– अरे वाह ! कितने नम्बर आये हैं?

– मम्मी ! मैं अपनी क्लास में सेकेंड पोजीशन पर हूँ।

– अरे वाह ! मेरा बेटा भगवान की कृपा से तू पास हो गया।

– भगवान की कृपा मतलब .....।

– अरे बेटा ! मैं रोज भगवान से प्रार्थना करती थी मेरा बेटा पास हो जाये और मैंने संकल्प लिया था कि यदि मेरा बेटा क्लास में टॉप आयेगा तो मैं महावीरजी जाकर चांदी का छत्र भगवान को चढ़ाऊँगी।

– मम्मी ये आप कैसी बातें कर रही हो? ऐसा कुछ नहीं होता।

– अरे भगवान के बारे में ऐसी बातें नहीं करते।

– यही तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि भगवान के बारे में ऐसी बातें नहीं करते।

– क्या मतलब?

– मतलब यह कि भगवान को पास- फेल करने वाला मानना भगवान का अपमान है।

– तो तू ऐसे ही पास हो गया। मेरी पूजा का कोई फल नहीं मिला।

– यदि कुछ मांगने के लिये पूजा करोगी तो पाप ही लगेगा।

– तू बड़ी–बड़ी बातें करने लगा है। मुझसे बड़ा हो गया है क्या?

– मम्मी आपसे बड़ा कैसे हो सकता हूँ? ये तो सब पाठशाला में सिखाया गया है। अच्छा आप ही बताइये कि वैभव की मम्मी ने तो वैभव के पास होने के लिये पूजा भी की और उपवास भी किये तो भी वैभव फेल हो गया और विद्या तो पूरे स्कूल में टॉप आई है उसकी मम्मी तो मंदिर भी नहीं जाती फिर कैसे पास हो गई?

– अच्छा!

– और नहीं तो क्या। अपने भगवान वीतरागी हैं। किसी का भला-बुरा नहीं करते। उन्हें भला-बुरा करने वाला मानना उनका अपमान करना है।

– लेकिन हम महावीरजी जाकर छत्र अवश्य चढ़ायेंगे।

– जरुर मम्मी। महावीरजी अवश्य चलेंगे लेकिन भगवान ने पास किया इसलिये नहीं। छत्र चढ़ाना तो रिश्वत हो गई। जब लोक में किसी रिश्वत लेता है तो उसे जेल जाना पड़ता है तो ये धर्म का मार्ग है और हमारे जिनेन्द्र परमात्मा तो वीतरागी हैं। उन्हें छत्र आदि का क्या काम?

– लेकिन भगवान कुछ तो करते होंगे?

– हाँ! करते हैं ना। अपनी आत्मा में लीन रहते हैं और अपनी आत्मा का सुख भोगते हैं। उन्हें जगत का कर्ता मानना मिथ्यात्व है और बहुत बड़ा पाप है।

– सचमुच! मेरा बेटा आज मुझसे भी बड़ा हो गया है।

– विराग शास्त्री

सहयोग प्राप्त

चेन्नई निवासी माननीय श्री भूपेन्द्रभाई भायाणी ने संस्था द्वारा चलाये जा रहे बाल संस्कार अभियान के कार्यों में प्रसन्नता व्यक्त करते हुये संस्था के सहायक पद को स्वीकार किया। संस्था के सहयोग के लिये हार्दिक आभार।

इसी अंक में प्रकाशित ज्ञान पहले के उत्तर - 1.सिद्ध 2.मुनि 3. आत्मज्ञानी 4. जिनवाणी

शवों की राख बिकती है अगरबत्ती के लिये

अगरबत्ती एक ऐसी वस्तु है जो पूजा का अनिवार्य अंग सा बन गई है। जिनधर्म में अगरबत्ती जलाने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता फिर भी कई जैनी भाई मंदिरों में या दुकानों में अगरबत्ती जलाना शुभ मानते हैं। मंदिरों, मस्जिदों अन्य धार्मिक स्थानों, दुकानों में अगरबत्ती का बहुत प्रयोग होता है।

बिहार के कई स्थानों के श्मशान स्थल, गंगा के घाटों पर कोयले के छोटे व्यापारियों का भीड़ लगी रहती है। लोग अपने प्रिय व्यक्ति की मृत्यु होने पर शव को जलाकर दुःखी मन से घर लौटते हैं, उसके बाद वहाँ पर पानी से शव की लकड़ी की आग को बुझाया जाता है। बाद में लकड़ी के टुकड़ों को बोरी में भरकर ठेकेदारों को सौंप दिया जाता है। यह बोरियाँ चारकोल बनाने वाले व्यापारियों के पहुँच जाती हैं। चारकोल का प्रयोग अगरबत्ती बनाने में किया जाता है। शव की बची हुई लकड़ी और कोयले से पाउडर बनाया जाता है और वह पाउडर अगरबत्ती बनाने वालों को बेच दिया जाता है और वह शव की राख अगरबत्ती में मिलाई जाती है। धार्मिकजन उस राख मिली अगरबत्ती को जलाकर पवित्र कार्य की शुरुआत करते हैं। इतना बड़ा पाप मात्र धन के लोभ में हो रहा है।

जानकार बताते हैं कि जली हुई लकड़ी का कोयला एसेंस सोखने कार्य करता है और शवों का कोयला बहुत सस्ते दामो में मिल जाता है। कुछ अगरबत्ती निर्माता बिस्कुट निर्माताओं से कोयला लेते हैं। परन्तु इसका मूल्य अधिक होने से इसे अधिक नहीं खरीदते।

जरा सोचिये! आप जो अगरबत्ती जला रहे हैं उसमें कहीं शवों की राख तो नहीं-------------------------।

- दैनिक समाचार पत्र

पंजाब केसरी, दिल्ली से साभार।

आत्मा शक्ति और अपनी भूल

राजा को तांत्रिक ने बताया कि आप एक मनुष्य और पशु-पक्षी के जोड़े को देवी के सामने बलिदान देंगे तो आपको आकाश में उड़ने वाली विद्या सिद्ध हो सकती है। राजा की आज्ञा पर सैनिकों ने पशु-पक्षी का जोड़ा तो लाकर दे दिया परन्तु उन्हें मनुष्य का जोड़ा नहीं मिला। राजा ने सेवकों से कहा कि कहीं से भी मनुष्य का जोड़ा लेकर आओ। राज्य के प्रत्येक गांव और नगर में ढूंढ़ते हुये उन्हें क्षुल्लक अभयमति और क्षुल्लिका अभयरुचि दिखाई दिये। ये दोनों सगे भाई-बहन थे। सैनिक उन्हें पकड़कर राजा के सामने ले गये। उन्हें देवी के मंदिर ले जाया गया। दोनों शान्तिपूर्वक जिनेन्द्रभगवान का स्मरण करने लगे। क्षुल्लक अभयमति मंदिर में हंसने लगे। राजा ने कहा कि मृत्यु के समय में आपको हंसी कैसे आ रही है? क्षुल्लक जी बोले - राजन्! जब एक दिन मरना ही है तो डरने की क्या आवश्यकता है? किन्तु मैं यह सोच रहा था कि मनुष्य स्वार्थ के लिये धर्म के नाम पर कितना पाप करता है? राजन्! तुम्हारा आत्मा परमात्मा बन सकता है। तुममें सिद्ध बनने की ताकत है और तुम व्यर्थ के काम में उलझकर अपनी शक्ति बरबाद कर पाप कमा रहे हो। तुम्हारी भूल इतनी बड़ी है कि अनन्त काल निगोद में दुःख भोगना पड़े। यह सुनकर राजा अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने राज्य में हिंसक आयोजन बन्द करने की घोषणा कर दी।

काम की चीज

एक सज्जन महात्मा गांधी से बहुत चिढ़ते थे। हमेशा उनकी निन्दा करते रहते थे। लेकिन वे गांधीजी के सामने कुछ नहीं कहते थे। एक दिन उन्होंने गांधीजी के लिये बहुत से अपमानजनक शब्द और गालियाँ कागज पर लिखीं और स्वयं गांधीजी को देने के लिये गये। गांधीजी ने ऊपर से कुछ लाइनें पढ़ीं और उसकी पिन निकालकर डिब्बी में रख ली और कागज को कचरे की टोकरी में डाल दिया। उस व्यक्ति ने कहा - आप पूरा तो पढ़ लीजिये, उसमें आपको बहुत काम की बातें पढ़ने को मिलेंगी। गांधीजी ने कहा - इस पत्र में काम की वस्तु थी उसे मैंने निकाल लिया है। वे सज्जन चुपचाप चले गये और उन्होंने गांधीजी की निन्दा करना छोड़ दिया।

वे कौन थे ?

1. वे कौन थे जिन्होंने मांगीतुंगी पर 100 वर्ष तक तप किया था?

उत्तर – बलदेव (श्रीकृष्ण के भाई)

2. वे कौन से मुनि थे जिन्होंने राजा के कहने पर मुनि बनने का नाटक किया और बाद में सच्चे मुनि हो गये?

उत्तर – ब्रह्मगुलाल।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिनका दीक्षा लेने के 1 वर्ष 1 महीने 13 दिन तक आहार नहीं हुआ?

उत्तर – ऋषभदेव मुनिराज।

4. वे कौन से तीर्थंकर मुनिराज थे जो सबसे कम दिन तक मुनि अवस्था में रहे?

उत्तर – मल्लिनाथ स्वामी।

5. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें 12 वर्ष तक णमोकार मंत्र याद नहीं हुआ और दाल– छिलके को देखकर आत्मज्ञान कर लिया था?

उत्तर – शिवभूति मुनिराज।

6. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने मुनि दीक्षा के बाद एक बार भी आहार नहीं लिया और वे मोक्ष चले गये? (कोई चार नाम)

उत्तर – भरत मुनि, गजकुमार मुनिराज, अंजन मुनिराज, सुकुमाल मुनिराज।

7. वे कौन से तीर्थंकर मुनिराज थे जिन्हें दर्पण में अपना मुख देखकर वैराग्य हो गया था?

उत्तर – शान्तिनाथ मुनिराज।

8. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने सिकन्दर से कहा था कि रास्ते में ही तेरी मृत्यु हो जायेगी ?

उत्तर – कल्याण मुनिराज।

9. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने शेर को धर्म का उपदेश सुनाया था?

उत्तर – अमितकीर्ति मुनिराज।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे हनुमान ने मुनि दीक्षा ली थी?

उत्तर – धर्मरत्न मुनिराज।

ज्ञायक हम

तुम तुम तुम, हम हम हम
नन्हे-मुन्ने ज्ञायक हम
छोटी सी है देह हमारी
पर मुझमें है ताकत भारी ॥1॥
चार गति की बाधा टलती
जब ज्ञायक में स्थिरता मिलती,
मुनि बनेंगे हम हम हम
सिद्ध बनेंगे हम हम हम ॥2॥

सबसे प्यारा

एक था चेतन, गतियाँ चार,
दुःख का देखा कभी न पार।
नरक से तिर्यन्च में आये,
नर सुर गति में भी दुःख पाये।
चार गति से थक कर आये,
जिनवाणी के वचन सुहाये।
हमने देखा है जग सारा,
भगवान आत्मा सबसे प्यारा॥

ब्र. सुमतप्रकाश जी जैन

इनमें से कौन-कौन सी वस्तुयें दिगम्बर मुनिराज के पास होती हैं निशान लगाइये -

आचार्य कुन्द-कुन्द को विदेह क्षेत्र पहुँचाइये

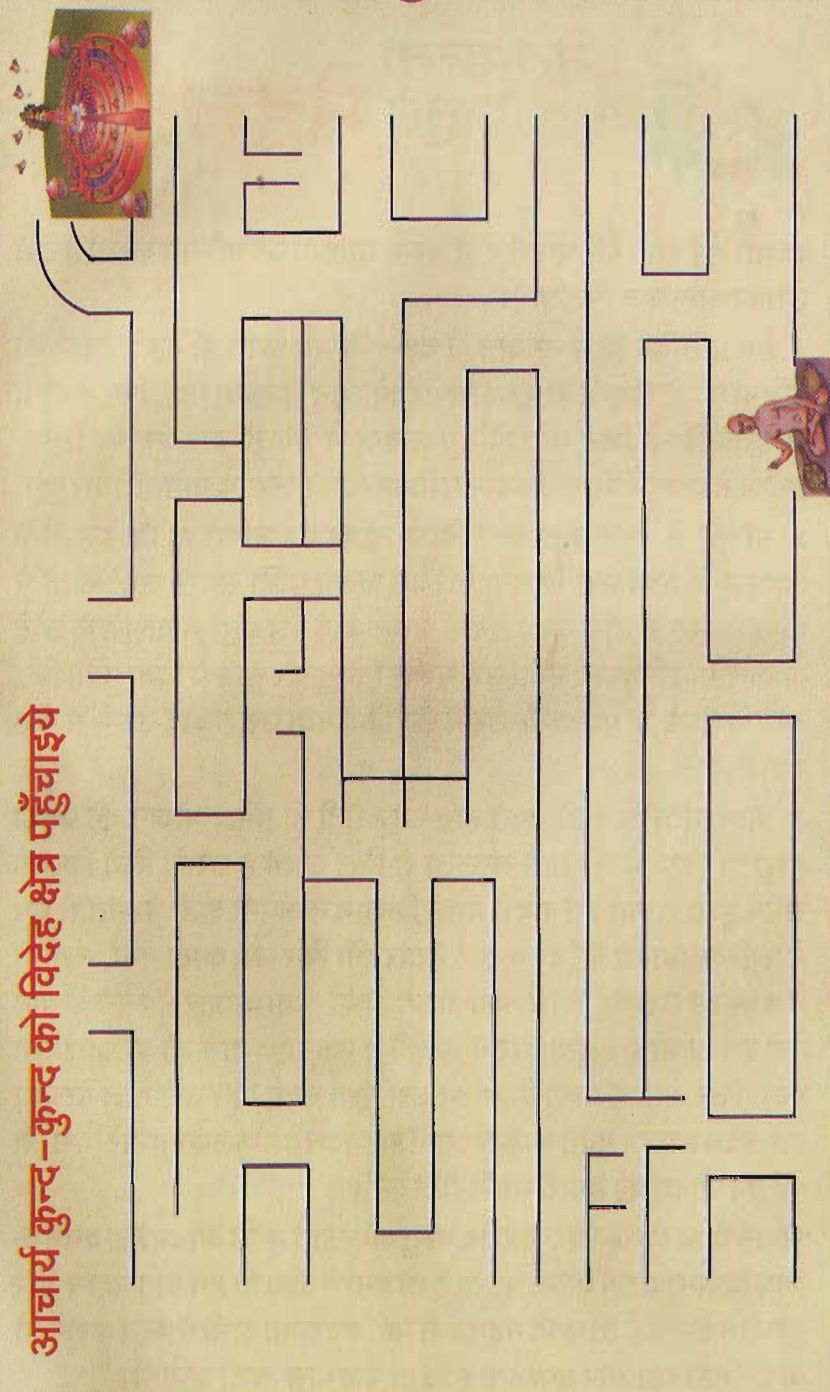

मत डरना तुम मेहनत से

बच्चो! हमें कभी परिश्रम से नहीं डरना चाहिये। जो परिश्रम करता है उसे उसका मीठा फल मिलता है।

1. हम प्रतिदिन जिन भगवान के दर्शन-पूजन करते हैं। वह भगवान की प्रतिमा पत्थर से बनी है। पहले पत्थर को खान से लाया गया। फिर मशीनों से उसकेहिस्से किये गये। फिर कलाकार ने सैंकड़ों बार उस पर छैनी-हथौड़े से प्रहार किये। उसे नया रूप दिया। तब जाकर एक प्रतिमा तैयार हुई।

2. बांसुरी से बहुत मीठा स्वर निकलता है। पर जानते हो कि इस मीठी आवाज के लिये उसे कितना परिश्रम करना पड़ा। सबसे पहले खेतों में बहुत मेहनत से बांस का पेड़ बना उसके बाद बड़े बांस से बांसुरी के छोटे आकार भाग निकाला गया। उसे मशीनों से सुन्दर सा रूप दिया गया। फिर लोहे के डण्डे को गर्म करके उसमें छेद किये गये। उसके बाद उसमें से मीठे स्वर निकले।

3. आप प्रतिदिन रोटी खाते होंगे और रोटी ही हमारे भोजन की प्रमुख वस्तु है। आपको जो रोटी सरलता से मिल जाती है उसके लिये कितना संघर्ष हुआ जानते हो! सबसे पहले किसान ने अपनी कड़ी मेहनत से धूप में पसीना बहाकर गेहूँ की फसल तैयार की। फिर उसे काटा गया, मशीनों में डालकर उस गेहूँ से छिलका अलग किया गया। बाजार में आने के बाद उसे हम अपने घर लाये। घर में चक्की में एक-एक दाने को बारीक पीसा गया। फिर आटे में पानी मिलाकर उसे गूंथा गया। फिर उसे गोल बेलकर गर्म तवे पर डाला गया। भयंकर अग्नि सहनकर वह फूलकर हमारे पास आ गई तब जाकर वह हमारी प्यारी रोटी बनी।

आपने देखा कि जब एक अजीव वस्तु को महान बनने और प्यारा बनने के लिये कितना संघर्ष करना पड़ता है तो हम तो जीव हैं। हमें यदि महान और गुणवान बनना है तो कभी मेहनत से नहीं घबराना। अभी मेहनत करोगे तो बाद में महानता और सफलता स्वयं आपके पास चली आयेंगी।

Body

The soul resides in me in the worldly state
knows and feels pleasure through my senses gate.
Knowledge through me is called empirical.
Pleasure through me is called corporeal.

In company of Jeev, I too am called one,
Given a name, respected a pampering done.
They swear to live with me for years untold,
But after the Jeev leaves, corpse am I called.

Then I am not tolerated for even a second,
Immediately got ridden, in fire I am lent.
Made up of Pudgala Dravya, Ajeev am I,
Always with you in Samsaar, Who am I ?

Body Body Body

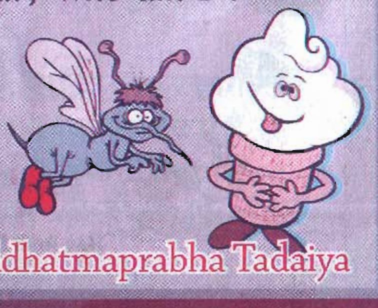

\- by Suddhatmaprabha Tadaiya

आपके ब्रश से

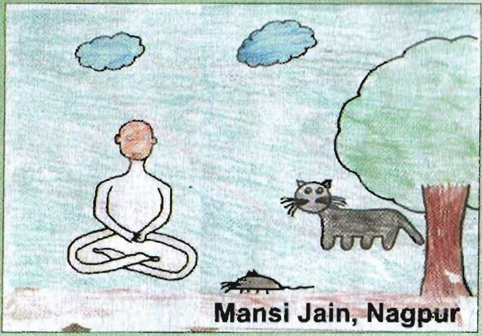

Mansi Jain, Nagpur

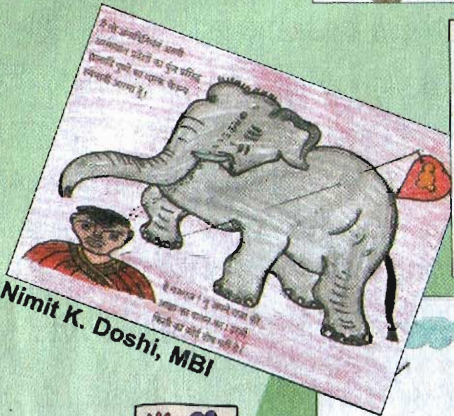

Nimit K. Doshi, MBI

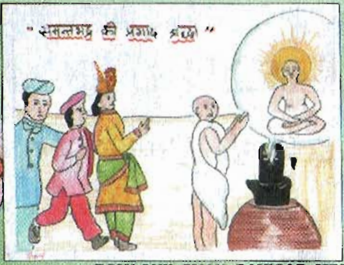

ROMI ANIL SHAH, DAHISAR, MBI

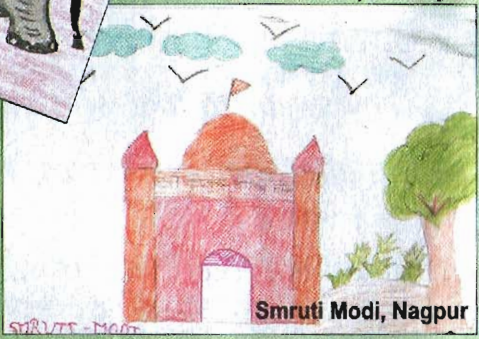

Smruti Modi, Nagpur

Nay Amit Shah, Malad, MBI

सूचना

यदि आपको भी पेन्टिंग की रुचि है तो आप भी अपने द्वारा बनाये गये चित्र को भेज सकते हैं। हम उसे इस पेज पर प्रकाशित करेंगे।

सम्यक् दर्शन के आठ अंग के वर्णन में आप पांच अंगों की कहानी पढ़ चुके हैं। इस अंक में पढ़िये वात्सल्य अंग की कहानी -

साहस और वात्सल्य

तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के समय में उज्जैन नगरी में राजा श्रीवर्मा राज्य करता था। उनके बलि, नमुचि, प्रहलाद और वनस्पति नाम के चार मंत्री थे। वे जैन धर्म से विद्रोह भाव रखते थे। एक बार उनके नगर में आचार्य अकम्पन अपने सात सौ मुनिराजों के संघ के साथ आये। सारे नगर के लोग अत्यंत आनंद भाव से मुनिराज के दर्शन के लिये गये। राजा श्रीवर्मा भी अपने चारों मंत्रियों के साथ दर्शन के लिये गये। यद्यपि मंत्रियों को दर्शन के भाव बिल्कुल भी नहीं थे परन्तु राजा के कहने पर उन्हें साथ में आना पड़ा।

मुनिराजों का समस्त संघ आत्म-ध्यान में लीन था। मुनिराजों को मौन देखकर चारों मंत्री भाव दुष्ट भाव से कहने लगे - महाराज! इन जैन मुनियों को कोई ज्ञान नहीं है इसलिये ये मौन रहने का नाटक कर रहे हैं, मौनंमूर्खस्य भूषणम्।

जब वे मंत्री राजा के साथ वापस आ रहे थे तो उन्हें उसी संघ के एक मुनि श्रुत सागर मुनिराज आते हुये दिखाई दिये। तब एक मंत्री मुनिराज को देखकर बोला- देखो! सामने से बैल चला रहा है। यह शब्द मुनिराज ने सुन लिये और प्रकाण्ड विद्वान श्रुत सागर मुनिराज ने अपने ज्ञान और तर्क से उन्हें चुप करा दिया। वे चारों मंत्री राजा के सामने अपने अपमान को सहन नहीं कर पाये। अपमान का बदला लेने के लिये उन्होंने मुनिराजों को मारने की योजना बनाई।

श्रुत सागर मुनिराज ने वापस आकर अपने आचार्य को सारी घटना सुनाई तो आचार्य ने कहा - जहाँ पर वाद-विवाद हुआ था वहीं पर जाकर ध्यान करो। रात को वे चारों मंत्री मुनिराज को मारने के लिये गये। ध्यान में खड़े हुये मुनिराज को मारने के लिये जैसे ही उन्होंने तलवार उठाई, उनका शरीर वहीं पर स्थिर हो गया। सुबह होने पर राजा को जब मालूम पड़ा कि मंत्रियों ने राजा को मारने का प्रयास किया तो उन मंत्रियों को गधे पर बिठाकर सारे नगर में घुमाया और देश से बाहर जाने का आदेश दिया।

वे मंत्री घूमते हुये हस्तिनापुर पहुँचे और वहाँ के राजा पद्मराय को अपनी कला से प्रसन्न कर वहाँ के मंत्री बनकर रहने लगे। एक बार बलि मंत्री ने हस्तिनापुर के शत्रु राजा सिंहरथ को अपनी युद्धकला से जीत लिया तो राजा पद्मराय ने कहा - जो वरदान मांगना हो मांग लो। तब चालाक बलि ने कहा कि समय आने पर मांग लूंगा।

इधर आचार्य अकम्पन आदि सात सौ मुनिराजों का संघ विहार करते हुये हस्तिनापुर आया तो इन मंत्रियों को अपना अपमान याद आया और उन्होंने मुनिराजों से बदला लेने का निर्णय किया। बलि राजा के पास पहुँचा और कहा कि महाराज ! मैं बहुत बड़ा यज्ञ करना चाहता हूँ अतः आप मेरे वरदान के अनुसार सात दिन के लिये मुझे राज्य मुझे सौंप दें। राजा ने सात दिन के लिये बलि को राजा घोषित कर दिया।

राजा बनते ही बलि ने जहाँ मुनिराज ठहरे हुये थे वहीं पर एक विशाल यज्ञ प्रारंभ कर दिया और अग्नि में डालने के लिये पशु, हड्डियाँ, मांस के ढ़ेर लगवा दिये और आग लगवा दी। मुनिराजों पर भयानक उपसर्ग आ गया। मुनिराज अपने ध्यान में लीन हो गये तो उस दुष्ट बलि ने मुनिराजों के चारों हरी घास लगवा दी जिससे मुनिराजों का कहीं पर आना-जाना बंद हो गया। प्रजा दुःखी हो गई और नगर की सारी जनता ने नियम लिया कि जब तक मुनिराजों का उपसर्ग दूर नहीं होगा तब भोजन-पानी का त्याग रहेगा।

तभी एक क्षुल्लकजी को मुनिराजों के उपसर्ग की जानकारी मिली। उन्होंने विचार किया इस उपसर्ग को दूर करने में मुनि विष्णु कुमार ही समर्थ हैं। वे तुरन्त विष्णुकुमार मुनिराज के पास पहुँचे और उनको सारी घटना की जानकारी दी और बताया कि आपको विक्रिया शक्ति प्राप्त है जिसके द्वारा अपना शरीर छोटा-बड़ा कर सकते हैं। तब करुणावश मुनि विष्णुकुमार तुरन्त हस्तिनापुर आये और मुनिपद त्यागकर छोटे से ब्राह्मण पण्डित का वेश बनाया और बलि राजा के पास पहुँच गया। ब्राह्मण पण्डित के भूमि मांगने पर राजा बलि ने प्रसन्न होकर कहा कि हे ब्राह्मण! आपको तीन पग भूमि चाहिये। आप स्वयं नापकर ले लेवें।

ब्राह्मण पण्डित ने अपना विशाल रूप बनाया और दो पग में सारी धरती नाप ली और तीसरे पग के लिये बलि के सीने पर पैर रख दिया। तब बलि और अन्य तीन मंत्रियों ने क्षमा मांगी। मुनि विष्णु कुमार ने सत्य धर्म का स्वरूप समझाया तो चारों मंत्रियों ने जैन धर्म को स्वीकार किया और सातसौ मुनिराजों का उपसर्ग दूर किया। सारे नगर में खुशियाँ मनाई गईं। हजारों श्रावकों ने मुनिराजों को आहार दिया और रक्षा पर्व होने के कारण परस्पर में रक्षा सूत्र बांधे। वात्सल्य का दिन होने के कारण इस दिन को रक्षा बंधन पर्व के रूप में मनाया जाना लगा। विष्णु कुमार मुनिराज ने ब्राह्मण का वेश त्यागकर प्रायश्चित्त लिया और पुनः मुनिव्रत अंगीकार किया और आत्मध्यानपूर्वक केवलज्ञान प्राप्त किया और मोक्ष गये।

ऐसे मनायें रक्षा बंधन

यह महापर्व मुनिराजों की रक्षा का पावन पर्व है। इस दिन को भाई-बहन के पर्व से जोड़ने से मुनिराजों का महत्व कम हो जाता है। हम मुनिराजों को भूल जाते हैं। तो क्या करें -

1. प्रातः जल्दी उठकर मुनिराजों का स्मरण करें और भावना भायें कि कभी भी दिगम्बर मुनिराजों पर और ज्ञानी जीवों पर कोई संकट न आये।
2. स्नान आदि कार्य करके जिनमंदिर जायें और आचार्य अकम्पन आदि की रक्षाबंधन सम्बन्धी पूजन करें।
3. प्रातः 11 बजे के पूर्व कुछ भी न खायें क्योंकि इस दिन मुनिराजों को उपसर्ग दूर के बाद आहार मिला था। यही भाव रखें कि मुनिराजों के आहार के पश्चात् ही भोजन ग्रहण करेंगे। हस्तिनापुर के साधर्मियों ने तो उपसर्ग के बाद से ही आहार-पानी का त्याग कर दिया था।
4. जिनमंदिर में गोष्ठी, विधान, प्रवचन आदि का आयोजन हो रहा तो अवश्य जायें।
5. आपस में एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधे। भाई-भाई को, बहन-भाई को, भाई-बहन को, बेटे अपने माता-पिता को रक्षा सूत्र बांधें। यह मुनिराजों की रक्षा का प्रतीक है।
6. यदि बहन भाई को राखी बांधती है तो बहन अपने भाई से धन आदि मांगने के बजाय एक नियम दिलावे। जैसे- रात्रि भोजन त्याग, आलू-प्याज आदि जमीकंद का त्याग, जिनमंदिर का नियम, दान का नियम, स्वाध्याय का नियम आदि जितनी सामर्थ्य हो उतना नियम अवश्य लेवें।
7. रात्रि में कुछ भी न खायें और सोते समय आंख बंद करके रक्षाबंधन की घटना को याद करें और संकल्प करें यदि जिनधर्म या धर्मात्मा जीवों पर कभी कोई संकट आयेगा तो हम पूर्ण शक्ति के साथ संकट दूर करने का प्रयास करेंगे।
8. विचार करें कि वीतरागी दिगम्बर साधु जो कि आत्मा की साधना करते हैं यदि पाप के उदय से उन पर भी संकट आ सकता है तो हमारे पाप का उदय आये तो इसमें क्या आश्चर्य है? जैसे सात सौ मुनिराज संकट आने पर अपनी आत्मा में लीन हो गये थे वैसे ही हम पाप का उदय आने पर शांति और समता धारण करेंगे।

पापा की बातें

"पापा देखो ना गौरव मुझे रुपये देने के लिये मना कर रहा है" मिनी ने पापा से शिकायत करते हुये कहा।

अरे भाई कौनसे रुपये ? क्या आपने गौरव को अपने पैसे दिये थे ? पापा ने पूछा

अरे पापा ! कल रक्षाबंधन का पर्व है ना तो मिनी मुझसे कह रही थी कि कल जब मैं तुम्हें राखी बांधूगी तो तुम मुझे रुपये देना। गौरव ने स्पष्ट करते हुये कहा।

अच्छा बच्चो! यह बात है। देखो मिनी ! पहली बात तुम्हें रुपये मांगना नहीं चाहिये। गौरव जो दे उसे खुशी से ले लेना। यह तो प्रेम का पर्व है। व्यापार का नहीं ।

लेकिन पापा हमेशा मैं ही रुपये क्यों दूँ? कल मैं मिनी को राखी बांधूगा और ये मुझे रुपये देगी। गौरव बुद्धिमान बनते हुये कहा।

मिनी ने तुरन्त कहा - अरे बुद्धु! राखी भाई, बहन को नहीं बहन, भाई को बांधती है। है ना पापा।

पापा ने कहा – तुम लोग तो बहुत होशियार हो गये हो। अच्छा ये बताओ कि आपको मालूम है कि रक्षा बंधन का पर्व क्यों मनाया जाता है ?

नहीं तो। दोनों ने सिर हिलाते हुये कहा।

रक्षाबंधन हमारे जैन धर्म का महान वात्सल्य पर्व है। इस दिन विष्णु कुमार मुनिराज ने अंकपन आचार्य आदि 700 दिगम्बर मुनियों का उपसर्ग दूर किया था। इसी खुशी में हस्तिनापुर नगर में पूरे नगरवासियों ने पूरे उत्साह से एक दूसरे का रक्षासूत्र बांधकर प्रसन्नता व्यक्त की थी।

पापा पूरी कहानी सुनाओ ना। गौरव ने जिद करते हुये कहा।

पूरी कहानी समझना है तो एक काम करो। इस बार चहकती चेतना के अंक में रक्षाबंधन की पूरी कहानी आई है। उसे शांति से पढ़ना और यदि कुछ समझ में न आये तो मुझसे पूछना। पापा ने समझाते हुये कहा।

ठीक है पापा।

लेकिन बच्चो! एक बात ध्यान रखना। राखी बांधने वाला काम बाद में करना। कल आपके स्कूल की छुट्टियाँ हैं इसलिये कल पहले मंदिर जाकर रक्षाबंधन पर्व की पूजन करना और अपने मुनिराजों को याद करना। संकल्प लेना कि यदि अपने जैनधर्म की रक्षा और उसके प्रचार-प्रसार के लिये जितना हो सके उतना सहयोग करना।

ठीक है पापा! दोनों ने खुश होकर कहा।

मिनी बोली – पापा आप कितने अच्छे हैं।

और हाँ! यदि तुम दोनों ही मुझे रक्षाबंधन की कहानी याद करके सुनाओगे तो दोनो को मैं कल एक गिफ्ट दूँगा।

गौरव ने हाथ हिलाते हुये कहा – पापा यू आर ग्रेट।

वेरी गुड मेरे बच्चों। पापा ने गर्व से कहा। आप हमें गिफ्ट दें या नहीं लेकिन हम कहानी अवश्य याद करेंगे – बच्चे सिर हिलाते हुये बोले।

ऐसे थे सेठजी

दिल्ली में एक सेठ सुगनचंदजी बहुत ही सज्जन और आदर्श पुरुष थे। इन्होंने अपने पिता सेठ हरसुखरायजी के साथ हस्तिनापुर और दिल्ली के आसपास 60-70 जैन मंदिर बनवाये। गरीबों और अनाथ लोगों की सहायता के लिये वे हमेशा तैयार रहते थे। एक बार सेठजी ने अपने पूरे गांव के जैन समाज के लोगों को भोजन पर आमंत्रित किया। एक गरीब जैन भाई ने सेठजी के यहाँ आने से मना कर दिया। सेठजी को मालूम हुआ तो वे तुरन्त उस जैन भाई की दुकान पहुँचे और उसकी दुकान से चने और गुड़ उठाकर खाने लगे । खाकर बोले कि भाई! जरा पानी पिलाओ। वह जैन भाई संकोच करने लगा कि इतने बड़े सेठ को पुराने से गिलास में कैसे पानी पिलाऊँ? वह संकोच के कारण वहीं बैठा रहा। सेठजी ने अपने हाथ से पानी भरकर पी लिया और बोले कि तुम्हें मेरे यहाँ भोजन पर आने में इसलिये संकोच हो रहा है कि तुमने आज तक मुझे भोजन नहीं कराया तो मेरे यहाँ तुम भोजन कैसे करोगे? इसलिये मैंने आज तुम्हारे यहां भोजन कर लिया है अब तुम मेरे यहाँ भोजन करने अवश्य आना। उस जैन भाई ने सेठजी से क्षमा मांगी और बाद में सेठजी के यहाँ भोजन करने गया। ऐसा होता है महान व्यक्तियों का जीवन।

आजादी
एक राजा बूढ़ा हो गया था. उस के तीन बेटे थे.
एक दिन राजा ने प्रधान से पूछा-
तीनों बेटों में से किसे राजा बनाया जाए?
प्रधान बुद्धिमान था. उस ने कहा-
महाराज, पहले तीनों की परीक्षा ली जाए. जो सफल होगा, वही राजा बनेगा.
राजा को सलाह अच्छी लगी. तुरंत तीन तोते लाए गए. प्रधान ने कहा-
एकएक तोता तुम तीनों को दिया जाएगा, जो उसे ज्यादा खुश रखेगा, उसे राजा बनाया जाएगा.

तीनों को एकएक तोता दे कर 8 दिन बाद आने को कहा गया.
8 दिन बाद तीनों दरबार में आए. बड़े बेटे के हाथ में चांदी का पिंजरा था. तोता सिर झुकाए बैठा था. उस के सामने मीठे फल रखे थे.
देखिए, चांदी के पिंजरे में यह कितना खुश है.
दूसरे बेटे के हाथ में सोने का पिंजरा था. हीरों से जड़े कटोरे में फल रखे थे. पर तोता खामोश बैठा था.
मैं ने इसे सोने के पिंजरे में रखा है. यह बहुत खुश है.
सब से छोटे बेटे के हाथ में कुछ नहीं था. उस के पास तोता भी नहीं था.

प्रधान ने पूछा-
तुम्हारा तोता कहां है?
छोटा बेटा बोला-
मैं ने अपने तोते को उड़ा दिया. अब वह आजाद है और आजादी से बढ़ कर कोई खुशी नहीं हो सकती.
प्रधान बोला-
महाराज, आप का छोटा बेटा ही राजा बनने के लायक है.
आप के दोनों बेटों ने तोतों को सोने, चांदी के पिंजरे दिए. एक से बढ़ कर एक खाने की चीजें दीं. मगर तोते खुश नहीं थे. क्योंकि वे पिंजरे में कैद गुलाम थे.
फिर राजा के सब से छोटे बेटे को राजा बना दिया गया.
आजादी से बढ़ कर दूसरी कोई खुशी नहीं.

" काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो ।
संयम-रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत है ॥ "
उत्तम संयम धर्म
इन्द्र सभा लगी है स्वर्ग में......
आज का अवसर कितना पवित्र है। भगवान महावीर को वैराग्य हो गया है। चलो पालकी में बैठाकर उन्हें वन में ले चलें।
हाँ! हाँ! चलिये महाराज
देवों ने पालकी सजाई, उसमें महावीर को बिठाया और पालकी उठाने लगे कि.....
अरे देवताओं! पालकी आप कैसे उठा रहे हैं? पालकी पहले हम उठायेंगे।
गर्भ में आने से पहले रत्न हमने बरसाये पांडुकशिला पर जन्माभिषेक हमने किया। अब तुम कहाँ से आ गये पालकी पहले उठाने वाले। पालकी को प्रथम उठाने का हमारा ही अधिकार बनता है।
मनुष्यों और देवों में झगड़ा होने लगा –
पालकी पहले हम उठायेंगे।
बड़े आये पालकी उठाने वाले। हम उठायेंगे पहले पालकी।

निर्णय गया एक वृद्ध पुरुष पर। दोनों ने अपनी-अपनी बात रखी......
श्रीमानजी। महावीर का जन्म हमारी ही तरह माता के गर्भ से हुआ, फिर ये बीच में देवता कहाँ से आ टपके? ये जानेगा हम।
महानुभाव ! जब हमने इनका गर्भ कल्याण मनाया, जन्म कल्याणक मनाया, तो तप कल्याण मनाने वाले ये मनुष्य कौन ?
भैया ! मैंने दोनों की दलीले सुनी। मेरा निर्णय है पहले पालकी वही उठाये जो इन जैसा बन सके।
देव निर्णय सुनकर रो पड़े, इन्द्र ने तो रोते-रोते मनुष्यों के सामने झोली पसार दी.....
रे मनुष्यों यहां हम लाचार हैं। हम इनकी तरह संयम धारण नहीं कर सकते। एक मिनट को भी भूख प्यास सहन नहीं कर सकते, भूख लगी कण्ठ से अमृत झर जाता है।
तो हार गये न आप ? अब तो हम उठालें पहले पालकी ?
भैया ! ठीक है अधिकार तो निर्णय के अनुसार आपका ही बनता है। परन्तु मैं झोली पसार कर आपसे कुछ क्षणों के लिये मनुष्य पर्याय देने की भीख मांगता हूँ।
भैया ! हम अपनी मनुष्य पर्याय भला आपको कैसे दे सकते हैं। तुम तो भैया ! अब यही भावना भाओ और पुरुषार्थ करो कि अगले जन्म में मनुष्य बनो और इन जैसे ही बन जाओ।

शेष अगले अंक में